दक्षिण कन्नड तट से कोष संपाश के ज़रिए काला पॉम्फ्रेट *फोर्मिओ नाइगर* की असाधारण पकड

कन्नड में "मानजी" नाम से जाननेवाले *फोर्मिओ नाइगर*, *पाम्पस अर्जेनटियूस* और *पाम्पस चैनेनासिस* को कोष संपाशों, गिल जालों और ट्राल जालों से पकडे जाते है। यहाँ के कुल समुद्री मछली उत्पादन के 0.5-1.0% इसका योगदान है। पकड का ज्यादा भाग माने 80% *एफ.नाइगर* है। पॉम्फ्रेटों के मत्स्यन के लिए अनुकूल महीने सितंबर से दिसंबर तक और फरवरी से मार्च तक होते हैं। सब से अनुकूल महीने अक्तूबर/नवंबर हैं। *एफ. नाइगर* की भारी पकड यहाँ की सविशेषता है वैसे अक्तूबर 1986, सितंबर 1987 और अक्तूबर 1990 में क्रमश 207, 161 और 377 टन और अक्तूबर 1990 में मँगलूर से 855.5 टन *एफ. नाइगर* प्राप्त हुआ। लेकिन पकड स्थिर नहीं थी, ऐसी भारी पकड छोटी अवधि के लिए ही प्राप्त होती थी।

भाव का स्वभाव

अक्तूबर, 1990 के पहले हफ्ते में भारी पकड के कारण मँगलूर में *एफ.नाइगर* का भाव प्रति कि.ग्रा 10 रुपये और 7.5 रुपये के बीच में था। यहाँ पहले हफ्ते में कुल मूल्य 63.5 लाख आकलित किया गया। दूसरे हफ्ते में पकड में घटती होने पर भी मूल्य पहले हफ्ते के समान ही रहा और कुल 7.8 लाख रुपये की मछली बिकी गई। माल्प में 7-11-1990 को पकडी गई मछली की मात्रा के आधार पर प्रति नाव की पकड का नीलाम दर 14,000 रुपये से 40,000 रुपये तक परिवर्तित रही। इससे मछली का प्रति कि.ग्रा का मूल्य 15-17 रुपये तक आया और केवल 7-11-1990 का कुल मूल्य 11.0 लाख रु. आकलित किया।

एफ. नाइगर का लंबाई चौडाई संबन्ध

माल्प से 7-11-1990 को कोष संपाश के ज़रिए पकडे गये *एफ. नाइगर* का आकलन 270 से 480 मि. मी के बीच दिखाया पडा। इनमें 21.6% 360 मि मी के आकार वर्ग के थे बाकी 9.8% 330 मी मि, 5.8% 390 मिमी और 3.9% 420 मि.मी के आकार वर्ग के थे। प्रति मछली का भार 385 से, 1,600 ग्रा के बीच दिखाया पडा।

काला पॉम्फ्रेट

लेखक

जी.एम. कुलकरनी, एस. केम्पराज, मधुमोहन, उमा भट और सी. पुरन्धरा

सी एम एफ आर आइ मँगलूर अनुसंधान केन्द्र, मांगलूर, कर्नाटक

मुख्य शब्द/Keywords

पॉम्फ्रेट - pomfret